रिकॉड़ः-जाग सजनियां जाग••• ओम शान्तिः प्रातः क्लास 31-5-67

मीठे-2 रुहानी बच्चो ने गीत सुना। बुधी मे स्वदर्शन चक्र फिर गया। बाप भी स्वदर्शन चक्रधारी कहलाते है। क्योंकि सृष्टी की आद मध्य ~~अन्त~~ अन्त को जानना यही है स्वदर्शन चक्रधारी बनना। यह बाते सिवाय बाप के ~~कर~~ और कोई समझा नही सकता। तुम बच्चो का सारा मदार है साईलेन्स पर। सभी मनुष्य कहते भी है शान्तिः देवा। हे शान्ति देने वाले। मालुम किनको भी नही है कि शान्ति कौन देते है। कोन्यां शान्ति धाम कौन ले जावेंगे यह भी तुम्ही को पता है। और कोई नही जानते है। यह भी बच्चे जानते है कि हम स्वदर्शन चक्रधरी बनते है। बाबा ही स्वदर्शन चक्रधारी बनाते है। देवता कोई स्वदर्शन चक्रधरी कहला नही सकते। कितना रात-दिन का फर्क है। तुम क्या कहते हो और भक्ति क्या कहती ~~है~~ है। बाप तुम बच्चों को समझाते है कि तुम हर एक स्वदर्शन चक्रधारी हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप को याद करना है और सृष्टी चक्र को याद करना है। यही मुख्य है। बाप को याद करना गोया शान्तिः का वर्सा लेना। शान्तिः मे सब जाते है। तुम्हारी आयु भी बड़ी होती जाती है। निरोगी काया बनती जाती है। सिवाय बाप के और कोई स्वदर्शन चक्रधारी बना नही सकते। आत्मा ही स्वदर्शनचक्रधारी बनती है। बाप भी है। क्योंकि सृष्टी की आदि मध्य अन्त का ज्ञान ही उनके पास है। गीता भी सुना कर अब नई दुनियां स्थापन कररहेहै। गीता तो मनुष्यो की बनाई हुई है। बाप बैठ सारा समझाते है। वो है सब आत्माओं का बाप सब बच्चे आपस मे भाई-2 हो जाते हैं। बाप जब नई दुनियां रचते है तो प्रजापिता ब्रह्मा दवारा तुम तुम भाई-बहन बनते हो। हर एक ~~मकुकु~~ है। यह बुधी मे रहने पर फिर स्त्री पुरुष का भान निकल जाता है। मनुष्य तुम पर हसी करते है। यह नही समझते है कि हम भी भाई-बहन है। फिर बाबा रचना रचते है तो भाई-बहन हो जाते है। क्रिमिनल दृष्टी निकल जाती है। इसलिये ही गन्धर्व विवाह भी गाया हुआ है। यहाँ की ही बात है। ~~अब~~ बच्चे शादी नही करते है तो मां-बाप की कितनी मार पड़ती है। भल लखपति करोड़पति हो तो भी बच्चे को शादी के लिये बहुत तंग करते है। कुमारियों को भी बहुत तंग करते है। इसलिये ही उनको बचाने के लिये यह युक्ति रची हुई है। दोनो प्रण करते है कि बाबा हम पवित्र बन कर आपका नाम रोशन करेंगे हम उनको भी बचावेंगे। सन्यासी तो कहते है कि आग कपूस इकठे नही रह सकते है। तुम फिर रह कर दिखलाओ। पुरुष मे ताकत रहती है। चाहे तो पत्नि को पवित्र रख सकते है। प्रतिज्ञा करते है कि बाबा हम क्यों नही पवित्र रहेंगे। बाप याद भी दिलाते है कि तुम पुकारते चले आये हो हे पतित पावन••• अब मै आया हूं तो कहता हूं कि यह अन्तिम जन्म पवित्र रहो। तो तुम पवित्र दुनियां का मालिक बन जावेंगे। यह प्रदर्शनी तो तुम्हारे घर-2 मे होनी चाहिये। क्योंकि तुम हो सच्चे ब्राह्मण। तुम्हें इन पर समझाना भी बहुत सहज है। 84का चक्र तो बुधी मे है। अच्छा कोई कहेंगे बाबा हम समझा नही सकते। बाकी हम घर मे प्रदर्शनी तो खोल देते है। बाबा कहते है तो अच्छा तुमको एक टीचर दे देंगे। वो आकर सर्विस करके जावेगी। ~~भक्ति~~ भक्ति मार्ग मे भी कोई कृष्ण की पुजा अथवा मन्त्र जन्त्र आदि नही जानते है। तो ब्राह्मण को बुलाते है। वो रोज आकर पुजा करके जाते है। तुम भी मंगवा सकते हो। यह है तो बहुत सहज की बाप ने प्रजापिता ब्रह्मा दवारा सृष्टी रची होगी। तो होंगे जरुर मकुकु होंगे। और बहन-भाई बने होंगे। प्रतिज्ञा करते है कि हम दोनो भाई-बहन होकर रहेंगे। विकार की दृष्टी नही रखनी है। सो हम नही रखेंगे। एक दो को सावधान कर उन्नित को पावेंगे। मुख्य तो है ही याद की यात्रा। वो लोग साईस के बल से कितनी ऊपर जाने की कोशिश करते है। परन्तु ऊपर मे कोई दुनियायें थोड़ेही ~~रख~~ रखी है। यह है ही साईस की अति मे जाना। अब तुम साईलेन्स की अति मे जाते हो श्रीमत पर। वो है आसुरी मत। उनकी है साईस तुम्हारी है साईलेन्स। बच्चे जानते है कि आत्मा तो खुद ही शान्त स्वरुप है। इस शरीर दवारा सिर्फ पार्ट मात्र बजाना होता है। कर्म बिना तो कोई रह नही सकते। बाप कहते है अपने को आत्मा शरीर से अलग समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। [illegible]

सबेस जास्ती जो मेरे भक्त अर्थात शिव के पुजारी है उनको जाकर समझाओ। ऊंच ते ऊंच पुजा है ह शिव की। क्योकि वो ही सबका सदगति दाता है। अब तुम बच्चे जानते हो कि बाप ओय है सबको साथ मे जाने। अपने ही समय पर हम भी ड्रामा प्लान अनुसार कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। फिर विनाश हो जोवंगा ? तो पुरुषार्थ यही करना है कि हम आत्मोय सतोप्रधान बन जावें। बाप की श्रीमत पर चलना है। श्रीमत भगवत गीता कहते है नां। कितनी बडी महिमा है। कृष्ण गीता ह झूठी तो सब बाल बच्चे ही झूठे हो जाते है। बच्चे जानते है कि इस समय है ही रावण राज्य। शैतानी राज्य। तुम भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते ही ओय हो फिर भी पढ़ने है। आधा कल्प भक्ति। फिर आधा कल्प तुम ज्ञान से सदगति को पाते हो। सदगति दाता को ही बुलाते है क्योकि यहां पर दुर्गति है। सब पतित है। परन्तु अपने को पतितात्मा समझते थोडेई है। कहते है विकार बिना बच्चे पेदा कैसे होगें। अरे बच्चे तो सतयुग मे भी होते है नां। उनको तो कहा ही जाता है सम्पूर्णनिर्विकारी दुनियां। देवताओं की महिमा भी गाते है सर्वगुण सम्पन्न ... बाप ह ही आकर सम्पूर्ण निर्विकारी बनाते है। जब फिर सम्पूर्ण पतित दुनियां होती है तब ही बाप आकर सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां बनाते है। सब कहते है कि हम भगवान के बच्चे है। तो जरूर पास मे स्वर्ग का वर्सा होना चाहिय नां। प्रजापिता ब्रह्मा दवारा हम अभी भी भाई-बहन बने है फिर भी बनेंगे। कल्प पहले भी बाप आया था। शिव जयन्ति मनाते थे। तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे बने होगें। बाप से प्रतिज्ञा करते है कि बाबा हम आपस मे पवित्र बन कर रहेंगे। आपके डायरेक्शनस पर चलते रहेंगे। कोई बडी बात तो नहीं है नां। अभी समझते है कि वो तो विष है। आधा कल्प तक हम विरव रवाते आये है। जो भावी थी वो पास्ट हुई। अब तो यह अन्तिम जन्म है। यह मृत्यु लोक रवत्म होना है। यह है ही शैतानी राज्य रावण राज्य। रावण को जलाते आते है। तुम अभी रावण को नही जलावेंगे। अभी तुम समझते हो कि यह तो नानसेन्सपना है। यह भी ड्रामा मे नूंध ह। अब बाप समझाते है कि इन गुरुओं को मारो बोलो। इन्होने ही तुमको पतित बनाया है। यह है ही भक्ति मार्ग के गुरु। यह कोई पावन बनाने वाले नही है। साधुसन्त आद की कितनी महिमा है। बाप कहते है कि जो अपने को भगवान कहलाते है वो हरणाकश्यप जैसे देत्य समझो। भगवान जो सदगति दाता है उस मिसल अपने को कहते है तो शैतान ठहेर नां। कोई कहे हम भगवान है। अगर कोई समझु मनुष्य हो तो कहे कि यह हमारा भगवान गाड बाप है? गुसे मे आकर पादर ठोक देवे। अभी तुम समझदार बने है कोई अपने को भगवान कहे तो कहो भगवान तो सब का सदगति दाता है फिर यह अपने को भगवान कैस कहला सकते है। यह तो हरणाकश्यप है। परन्तु कुछ कर नही सकते। क्योकि समझते है कि ड्रामा का रवेल है। एक तरफ तो शिवोअहम भी कहते है फिर दुसरी तरफ शिव की पुजा भी करते है। ईश्वर को सर्वव्यापी भी कहते है फिर उनकी पुजा भी करते रहते है। बिलकुल ही बुधी मारी जाती है। इसलिये ही भारत का हाल देरवो तो क्या है। कल की ही तो बात है नां। आज भारत पत्थर बुधी नर्क है। कल स्वर्ग बनेगा। फिर हम हीरे जवाहर के महल बनावेंगे। बाप तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे है। बाप कहते है कि अब सर्विस मे तत्पर रहो। घर-2 मे प्रदर्शनी रवोलो। इन जैसा महान पुण्य कोई होता नही। जिनको बाप का रास्ता बताना उस जैसा पुण्य कोई होता नही। बाप कहते है मामेकमयाद करो तो पाप विनाश हो जावेंगे। बाप को बुलाते भी इस लिय हो कि हे पतित पावन आओ हे लिबरेटर आओ। तुम्हारा भी नाम पाण्डव ग गाया हुआ है। बाप भी पण्डा है। सब आत्माओं को ले जावेंगे। वो है जिस्मानी पण्डे। यह है रुहानी। वो जिस्मानी यात्रा यह है रुहानी। सतयुग मे जिस्मानी यात्रा भक्ति मार्ग की होती ही नही है। वहां पर तुम पुज्य बनते हो। अब बाप तुमको कितना समझदार बनाते है तो बाप की मत पर चलना चाहिए नां। कोई भी शास्त्र आवे तो पुछना चाहिये। कईयों को रवयाल आता है कि बाबा सन्यासियों के लिय यों करते

लियें ऐसे क्यो कहते है? और बाप को निन्दा थोडेई कर रहे है। यह तो बाप समझाते है छुडाने के लिये। यह समझाया जाता है के कैसे अपने को भगवान कहला कर दुर्गति को पहुचाते है। मै तुम्हारा सदगति दाता हूं। फिर तुम दुर्गति मे कैस गये? आधा कल्प बाद फिर से यह 5विकार प्रवेश करते है। उसमे भी पहले अ आता है देह-अभिमानी। अब बाप कहते है मीठे-2 बच्चो देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करो। तुम मेरे लाडले बच्चे हो नां। आधा कल्प के तुम आशिक हो। एक के ही ढेर नाम रख दिये है। कितने नाम कितने मन्दिर बनाये है। मै हूं तो एक ही। मेरा नाम है शिव। हम 5000वर्ष पहले भी भारत ही मे थे। अब भी ऐडॉप्ट कर रहे है। ब्रह्मा के बच्चे होने कारण तो पोत्रे पोत्रियां हो गये। यहां वर्सा मिलता ही है आत्मा को यहां बहन-भाई का स्वाल ही नही उठता। आत्मा ही प है आत्मा ह वर्सा लेती है। सबका हक है। बेहद का बेहद के बच्चो को बेहद की नालेज दे रहे है। बेहद का त्यागकरवाते है। कहते है इस पुरानी दुनियां मे तुम जो कुछ भी देखते हो वो सभी कुछ विनाश हो जाना है। महाभारत लडाई भी बराबर है। बाप ने राजयोग सिखाया था। राजस्व अश्व मेध यज्ञ रचा था। फिर राजाई के लिये सतयुग नई दुनियां जरूर चाहिये। पुरानी दुनियां का विनाश भी हुआ था। 5000वर्ष की बात है नां। यह लडाई लगी थी। जिससे गेट खुले थे। बोर्ड पर यह लिख दो कि स्वर्ग के दवार कैसे खुल रहे है आकर समझो। तुम नां समझा सकते हो तो दुसरा कोई बुलाओं। फिर ढेरो की ढेर वृधी होती जावेगी। तुम कितने ढेर ब्राह्मण ब्राह्मिण्या हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे वर्सा मिलता है शिवबाबा से। वो हो सबका बाप है। यह तो बुधी मे अच्छी रीती याद रखना चाहिये कि हम ब्राह्मण सो देवता बनते है। हम देवता थे। फिर चक्र लगाया। अब हम ब्राह्मण बने है फि विष्णु पुरी मे जावेंगे। ज्ञान है तो बहुत सहज परन्तु कोटो मे कोऊ ही निकलते है। प्रदर्शनी मे कितने ढेर आते है कोटो मे कोऊ निकलते है। कोई तो सिर्फ महिमा ही करते है। बहुत अच्छा है। हम फिर आवेंगे। कोई विरले सात रोज का कोर्स उठाते है। सात रोज की बात भी अभी कर ही है। सात दिन आपको भठी मे पड़ना है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने पर सारा किचरा निकल जावेगा। आधा कल्प की गन्दी बिमारी देह-अभिमान की है। वो निकाल है। देहीअभिमानी बनना है। सात रोज का कोर्सवाले कोई बहुत थोडे है। बाण कोई को सेकिंड मे भी लग सकता है। देरी से आने वाले भी आगे जा सकते है। कोंगे हम रेस कर बाबा से पुरा वर्सा ले ही लेंगे। कई तो पुरानो से भी तीखे चले जाते है। क्योकि अच्छे-2 पुआईन्टस तैयार मिल जावेंगे। प्रदर्शनी आद पर समझाने मे कितना सहज होता है। खुद नही समझा सको तो दुसरी कोई बहन को बुलाओ। रोज आकर कथा करके जावे। 5000वर्ष पहले ही इन ल-न का राज्य था। जो ही 1250 वर्ष चला। कितनी छोटी सी कहानी है। हम सो देवता थे फिर सो क्षत्री सो वैश्य सो क्षुद्र बने। हम आत्मा ही अब ब्राह्मण बनती है। फिर हम ही सो देवता बनेंगे। हम सो का अर्थ कितना युक्ति युक्त सुझाते है। विराट रूप भी है परन्तु उसमे से ब्राह्मण को तो उडाही दिया है। और शिव बाबा को भी उडा दिया है। अर्थ कुछ भी नही समझते। अब तुम बच्चो को मेहनत करनी ही है याद की। और को संशय मे नही आना चाहिये कि यह क्यो हुआ? यह क्यो करते है? सब बाते छोड कर एक बातमे रहो। हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है जितना बाप को याद करेंगे उतना ही विक्रमाजीत पद को पावेंगे। बाकी वाहायात बातो मे माया खराब नही करना है। सब बातो मे एक बात मुख्य है। उनको नां भूलो। कोई साथ ह टाईम वेस्ट नही करो। तुम्हारा टाईम बहुतवेल्युबुल है। तुफानो से डरना नही है। बहुत तकलीफें आवेंगी धुटका पडेगा। परन्तु बाप की यसर को नही भुलना है। परन्तु बाप की याद को नही भुलना है। याद से ही पावन बनना है। पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। यह बुढा ऊंच (बाबा) पा सकता है हम क्यो नही पासकते है? यह भी तो पढाई ही है नां तुमको इसमे कुछ भी किताब आद उठाने की दरकार नही है। बुधी मे सारी कहानी है। लेकिन हर एक के पुरुषार्थ से उनका पद समझा जा सकता है। अच्छा आजाकारी बच्चो को बाप दादा का प्यारओम